



पशुधन एवं दुग्ध व्यवसाय का प्रबंधन

मयंक दुबे*, राहुल कुमार राय* और हिमांशु पाण्डेय**

उत्तर प्रदेश राज्य के बुंदेलखंड क्षेत्र में भौगोलिक और प्राकृतिक परिस्थितियों का सामना करने के लिये एकमात्र विकल्प पशुपालन व्यवसाय ही रह जाता है। क्षेत्र में जहां एक ओर वर्षा अभाव के कारण कृषि से जीविकोपार्जन करना अत्यंत कठिन होता जा रहा है, वहीं दूसरी ओर औद्योगिक रोजगार के अवसर भी नगण्य हैं। ऐसी स्थिति में ग्रामीण लोगों ने पशुपालन को ही जीवनशैली के रूप में अपना रखा है। पशुपालन व्यवसाय से क्षेत्र की अर्थव्यवस्था अनेक प्रकार के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष घटकों से लाभान्वित होती है। इस क्षेत्र के पशुपालन व्यवसाय को समृद्ध बनाने के लिये यह भी आवश्यक है कि यहां पशु आधारित उद्योगों का विकास किया जाए। ऐसा करने से राज्य के पशुपालकों की आय में वृद्धि ही नहीं होगी, बल्कि राज्य के दुग्ध जैसे औद्योगिक विकास को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

बुंदेलखंड में कृषि वर्षा आधारित होने के कारण इस क्षेत्र के किसानों के जीवन में पशु सदैव से ही रीढ़ की हड्डी की भांति भूमिका निभा रहे हैं। जबसे कृषि व पशु का संबंध विच्छेद हो गया उसी समय से बुंदेलखंड में कृषि एवं पशुपालन में परेशानियां बढ़ गई हैं। अन्नाप्रथा बुंदेलखंड के किसानों

*बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (उत्तर प्रदेश); **भाकृअनुप-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

सारणी 1 पशुओं की विभिन्न प्रजातियों की संख्या वर्ष 2019 (लाख में)

पशु	भारत	उत्तर प्रदेश	बुंदेलखंड
गाय	192.49	19.02	1.59
भैंस	109.85	33.02	2.00
भेड़	74.26	0.98	0.12
बकरी	148.88	14.48	1.72
शूकर	9.06	0.40	0.02
कुल पशुधन	535.82	67.8	5.45
कुक्कुट	851.81	12.5	0.72

स्रोत: पशु गणना, 2019

पशुधन उत्पादकता बढ़ाने के उपाय

इस क्षेत्र के पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने के लिये जहाँ एक ओर पशुपालकों को शिक्षित करते हुये उन्हें आधुनिक पद्धतियों का प्रशिक्षण देना जरूरी है, वहीं दूसरी ओर सभी क्षेत्रों में पशुओं की नस्ल सुधार योजनाओं को और प्रभावी ढंग से लागू करना अति आवश्यक है। सरकार को पशुओं के संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिये चिकित्सा सुविधाओं का भी शीघ्रातिशीघ्र विस्तार करना चाहिये। पशुपालकों को जागरूक बनाकर पशु संवर्द्धन कार्यक्रमों और योजनाओं को सफल बनाने का प्रयास करना चाहिये। पशुपालकों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये उन्हें सरल और कम ब्याज दरों पर संस्थागत ऋण मिलने चाहिये। अकाल एवं सूखे की दशा में पशुपालकों को पूर्ण संरक्षण दिया जाना चाहिये। वर्षभर चारा उपलब्ध होने वाले चारागाहों का विकास करना भी बहुत जरूरी है। बुंदेलखंड क्षेत्र में पशुधन की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय बिन्दुवार दिये गये हैं:

- इस क्षेत्र के अनुत्पादक नस्ल के स्थानीय पशुधन को चिन्हित कर नस्ल सुधार कार्यक्रम के द्वारा उत्पादक बनाया जाये।
- सैक्स साँटेंड सीमन (वर्गीकृत वीर्य) तकनीकी का प्रयोग कर अधिक से अधिक मादा पशुओं को ही पैदा करने पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए।
- उच्च आनुवांशिक गुणवत्तायुक्त देसी नस्लों के साथ स्थानीय और अवर्णित नस्ल के आनुवांशिक सुधार कार्यक्रम को प्रभावी तरीके से क्रियान्वित करना।
- बुंदेलखंड क्षेत्र के किसानों को पशुधन आधारित कृषि प्रणाली मॉडल को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण देना चाहिए।
- किसानों को जैविक खेती के लिए पशुधन की महत्ता तथा उन से प्राप्त गोबर की खाद के उपयोग को बढ़ावा देना तथा वर्मीकम्पोस्ट, गोबर की खाद और अन्य जैविक कचरे का उपयोग करके जैविक खेती शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।
- दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य एवं उन्नत प्रजनन चक्र के लिए वर्षभर हरे चारे के साथ-साथ पौष्टिक आहार की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। संसाधनहीन क्षेत्रों में पशुपालन को अपेक्षाकृत सस्ता बनाने के लिए व्यावहारिक और सस्ता राशन विकसित करने की उचित व्यवस्था भी करनी चाहिए।
- दुग्ध व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए घर-घर दुग्ध संग्रह करने के लिए सुदृढ़ व्यवस्था के साथ-साथ दुग्ध से संबंधित उद्यमों का सृजन और बुंदेलखंड क्षेत्र की देसी दुधारू गायों से एकत्र दूध की पैकेजिंग और वितरण की उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

का सिर दर्द बन चुकी है। अन्नामवेशियों के विचरण को क्षेत्रीय भाषा में अन्नाप्रथा बोला जाता है। प्रतिवर्ष इस समस्या की वजह से बुंदेलखंड में लगभग 15 से 20 फीसदी फसल का नुकसान किसानों को झेलना पड़ता है। व्यवस्थाओं की खामी और बढ़ते मशीनीकरण के कारण यह समस्या अब भी दूर होने का नाम नहीं ले रही है, बल्कि दिन-प्रतिदिन इन अन्नामवेशियों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

इन्हीं पशुओं की वजह से बुंदेलखंड दुनिया में सबसे कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों में शामिल है। देश के अन्य हिस्सों में जहाँ पशुपालन एवं कृषि के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में नवीनतम अध्ययन एवं अनुसंधानों के कारण महत्वपूर्ण बदलाव आया है, वहीं बुंदेलखंड इस कुप्रथा के दंश को झेलने को मजबूर है। इस क्षेत्र में पशुओं की कम उत्पादक नस्लें, अनुत्पादक पशुओं की अधिक आबादी, अप्रभावी निवेश आपूर्ति तन्त्र, पारंपरिक दुग्ध विपणन प्रणाली एवं अपर्याप्त व कम गुणवत्तापूर्ण भोज्य संसाधनों की कमी पशुपालन



खेत में चरती हुई गायों के समूह का परिदृश्य



भैंस से दुग्ध दुहन करती हुई महिला किसान

सारणी 2 बुन्देलखंड में जिलेवार चारे की खेती वर्ष 2014-2015 (हैक्टर में)

जिला/मंडल	खरीफ (हैक्टर)	रबी (हैक्टर)	जायद (हैक्टर)	कुल (हैक्टर)
जालौन	1730	486	1	2217
झांसी	258	430	19	707
ललितपुर	0	209	2	211
झांसी मंडल	1988	1125	22	3135
हमीरपुर	1405	265	4	1674
महोबा	59	7	0	66
बांदा	2967	624	7	3598
चित्रकूट	1492	59	0	1551
चित्रकूट धाम मंडल	5923	955	11	6889

स्रोत: उत्तर प्रदेश कृषि डाटा बुक, अक्टूबर 2018

सारणी 3 बुन्देलखंड तथा राज्यवार गोपशुओं की तुलनात्मक उत्पादकता

राज्य/क्षेत्र	देसी/एनडी मवेशी (किलो/दिन)	विदेशी/क्रॉसब्रेड मवेशी (किलो/दिन)	भैंस (किलो/दिन)
बुंदेलखंड	2.460	5.749	3.43
उत्तर प्रदेश	3.07	7.36	4.53
पंजाब	6.91	13.43	8.44
हरियाणा	5.91	8.92	9.11
गुजरात	4.40	9.32	5.15
आंध्र प्रदेश	3.53	9.61	7.52
राष्ट्रीय	3.01	7.95	5.62

स्रोत: (बी.ए.एच.एस.ए. 2019)

एवं दुग्ध व्यवसाय के लिये अवरोधक का कार्य उत्पन्न कर रहे हैं। इस क्षेत्र में अधिकांश किसानों की आजीविका का आधार कृषि होने के कारण चारे की भी कमी बनी रहती है। फलतः पशुओं को सूखे पत्तों और डंठलों आदि पर ही निर्भर रहना पड़ता है। कृषि उत्पादन पूर्णतः वर्षा पर निर्भर करता है, किन्तु अपर्याप्त वर्षा के कारण यहां प्रत्येक तीन-चार वर्ष बाद पूर्ण या आंशिक अकाल की छाया बनी रहती है। इससे अधिकांश पशु अकाल की चपेट में आ जाते हैं। पशुपालक कठिनाई में पड़ जाते हैं, जिसके कारण बुंदेलखंड क्षेत्र के पशुधन कृषक की सम्पत्ति के बजाय एक दायित्व की तरह हैं।

पशुपालन की उचित व्यवस्था

यदि देखा जाय तो बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए पशुपालन व्यवसाय बहुत महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में पशुधन के विकास एवं विस्तार के लिए कुछ आधारभूत एवं संरचनात्मक ढंग से पशुपालकों को शिक्षित करने एवं उन्हें आधुनिक विधियों का प्रशिक्षण देकर पशुपालन दुग्ध उत्पादकता को बढ़ाने के लिए पशुओं को पौष्टिक आहार, चारा, चारागाहों की उचित व्यवस्था एवं रोगों के निदान के लिए उचित चिकित्सा व्यवस्था का प्रबंधन है। परंपरागत तथा रुढ़िवादी तरीकों से पशुपालन की जगह आधुनिक तरीके से पशुपालन विधियों के द्वारा पशुपालकों को प्रेरित कर व्यावसायिक दृष्टिकोण द्वारा बुंदेलखंड के पशुधन की उत्पादकता में वृद्धि भी इससे अन्नाप्रथा जैसी कुप्रथा से निजात पाने की आवश्यकता है।

निवेदन

लेखक बंधु खेती पत्रिका के लिए अपने लेख और संबंधित फोटो, कवरिंग लैटर के साथ सिर्फ ई-मेल पर ही अपने मोबाइल नम्बर के साथ भेजें। ध्यान रखें कि फोटो जेपीजे फॉर्मेट में और उच्च रेजोल्यूशन की हों। लेख में अधिकतम 1200 शब्दों की संख्या रखने का प्रयास करें। इसके अतिरिक्त सुझाव और प्रतिक्रियाएं भी ई-मेल के माध्यम से भेज सकते हैं। भेजने के लिए कृपया कृतिदेव 010 टाइप फेस का प्रयोग करें।

हमारा ई-मेल है :
epatrika.icar.org.in

—संपादक